तृतीय अध्याय

मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी-पात्र

प्रस्तावना -

3.1 चरित्र चित्रण का स्वरूप

3.2 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व

3.3 कहानी की पात्रयोजना

3.4 मृदुला गर्ग की आलोच्य कहानीसंग्रहों की कहानियों में नारी पात्र

3.5 ' ग्लेशियर से ' के नारी पात्र

3.5.1 उषा भटनागर / मिसेज दत्ता

3.5.2 श्यामला पुरी

3.5.3 शेफाली

3.5.4 मीरा

3.5.5 वह

3.5.6 प्रेमा

3.5.7 नीना

3.5.8 निर्मला

3.5.9 वह

3.6 ' शहर के नाम ' के नारी पात्र

3.6.1 शारदाबेन

3.6.2 लल्लीबेन

3.6.3 मनुबेन

3.6.4 नन्नीबेन

3.6.5 चैरी

3.6.6 'मैं' अर्थात कहानी की नायिका

3.6.7 सुवर्णा

3.6.8 लेखा

3.6.9 विनीता

3.6.10 नन्दिनी

3.6.11 सरिता

3.6.12 उमा

3.6.13 हेमवती

3.6.14 तारा

3.6.15 प्रीति

3.6.16 'मैं' अर्थात कहानी की नायिका

3.6.17 'मैं' अर्थात कहानी की नायिका

निष्कर्ष -

संदर्भ-सूची

प्रस्तावना -

आधुनिक कथा साहित्य में मृदुला गर्ग का नाम बहुत चर्चित रहा है । आज की नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से तथा मार्मिकता से उन्होंने उभारा है । आधुनिक नारी जीवन, उसकी सारी जटिलताओं और समस्याओं के साथ मृदुला गर्ग ने पाठकों के समक्ष इस स्वाभाविकता के साथ रखा है, कि पाठक अनिवार्य रूप से नारी की समस्या और उसके भविष्य के प्रति चिंतित होकर उसका समाधान ढूँढ़ने का प्रयास करता है ।

मृदुला गर्ग के आलोच्य कहानी संग्रहों की कहानियों के नारी पात्रों पर विचार करने से पहले चरित्र-चित्रण क्या है, और उसका कहानी में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान है, यह देखना अनिवार्य है । आज कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व बढ़ गया है । इस कारण उसका स्वरूप समझ लेना अत्यंत आवश्यक है ।

3.1 चरित्र-चित्रण का स्वरूप -

कहानी में कथावस्तु के उपरान्त चरित्र-चित्रण को ही स्थान दिया जाता है । चरित्र-चित्रण में पात्रों के माध्यम से मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत किया जाता है । मनुष्य के चारित्रिक विकास की प्रक्रिया का भी परिचय दिया जाता है । डॉ. गुलाबराय ने कहानी में चरित्र-चित्रण तत्व के महत्त्व को विशद करते हुए बताया है कि, " आजकल कथानक को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता, जितना कि चरित्र-चित्रण और भावाभिव्यक्ति को । चरित्र-चित्रण का संबंध पात्रों से है । कहानी में पात्रों की संख्या न्यूनातिन्यून होती है । कहानी में पात्रों के चरित्र का पूर्ण विकासक्रम नहीं दिखाया जाता, वरन् प्राय: बने-बनाये चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश डाला जाता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे ।"[1] गुलाबराय जी ने चरित्र-चित्रण के महत्त्व को बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है ।

डॉ. परमानंद श्रीवास्तव ने कहानी में चरित्र-चित्रण के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए बताया है कि - " कहानी में ' घटनाओं ' के निर्णायक चरित्र ही हो सकते हैं और ' घटनाओं ' का निर्माण कहानी में ' चरित्रो ' के निर्देशन के लिए ही किया जाता है, अत: माना जा सकता है कि घटना-प्रधान या चरित्र प्रधान कहानियों के आधार पर कहानी का जो वर्गीकृत विभाजन अब तक किया जाता रहा है, अनुचित है । पर उपर्युक्त विभाजन की संगति का एक आधार यह है कि प्राचीन कहानियों के रचनाकारों ने ही इस विभाजन को मानकर अपनी कहानियों का निर्माण किया है । उपर्युक्त विभाजन का अनौचित्य आधुनिक कहानियों के प्रकाशन में आने के बाद से ही अनुभव किया गया है क्योंकि आधुनिक कहानियाँ चरित्रों को

परिस्थितियों के अधिक गहरे परिपार्श्व में चित्रित करती हैं । ''[2] परमानन्द ने अत्यंत सही शब्दों में से चरित्र-चित्रण के स्वरूप को स्पष्ट किया है ।

3.2 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व -

आधुनिक काल में कहानी साहित्य में चरित्र-चित्रण का क्या महत्त्व है, इस संदर्भ में डॉ. प्रताप नारायण टंडन ने अपने महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए कहा है - '' चरित्र-चित्रण कहानी का एक महत्त्वपूर्ण तत्व है । इस तत्व के अंतर्गत कहानी के पात्रों की भावात्मक, बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं की अभिव्यंजना होती है । सैद्धांतिक रूप मे जहां पर यह तत्व एक कहानी की कलात्मक उत्कृष्ठता का द्योतक होता है, वहाँ व्यावहारिक दृष्टि से यह कहानी के उद्देश्य और उदात्तीकृत आदर्श का प्रस्तुतीकरण भी करता है । कहानी में पात्र योजना के संदर्भ में एक बात यह सबसे अधिक ध्यान में रखने योग्य है कि उसमें यथासंभव किसी एक पात्र के ही जीवन की किसी घटना विशेष की कलात्मक अभिव्यंजना होनी चाहिए ।''[3] स्पष्ट है कि चरित्र-चित्रण को कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व माना जाता है ।

डॉ. सुमन मेहरोत्रा जी ने कहानी में चरित्र-चित्रण के महत्त्व को बताते हुए कहा है कि, '' पात्र कहानी की सजीवता के संचालक होते हैं, क्योंकि पात्रों की अवतारणा में कहानीकार की अनुभूति की सृष्टि की यथार्थता होती है जो पात्रों के अदृश्य रूप को भी दृष्टव्य बना देती है । पात्रों का विश्लेषण सिद्ध करता है कि उनके भाव, संघर्ष और मानवीय स्वभावगत प्रश्नों की श्रृंखला ही कहानी को सप्रमाणता प्रदान करती है और इन सबसे ही पात्र का चरित्र बनता है ।''[4]

3.3 कहानी की पात्रयोजना -

कहानी में पात्रों की संख्या सीमित रहती है, प्रधान पात्र तो एक ही पात्र रहता है परंतु सामान्यत: तीन चार पात्र होते हैं । क्योंकि अधिकता होने पर उनके चरित्र का विकास असंभव हो जाता है और कहानी की प्रभावशाली एकनिष्ठता समाप्त हो जाती है । कहानी में प्रासंगिक कथाओं के अभाव में सह-नायक आदि का प्रश्न नहीं उठता । कहानी के पात्रों पर कहानीकार का अंकुश होता है । कहानी में चरित्र की झलक होती है । कहानी में प्राय: प्रत्यक्ष तथा अभिनयात्मक चरित्र-चित्रण प्रणाली का प्रयोग होता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी के तत्वों के अंतर्गत पात्र तथा चरित्र-चित्रण अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व बन गया है । आधुनिक कहानी में पात्रों के चरित्र चित्रण में मनोविज्ञान को अधिक महत्त्व दिया जाता है ।

3.4 मृदुला गर्ग के आलोच्य कहानी संग्रहों की कहानियों में नारी पात्र -

मृदुला गर्ग के आलोच्य कहानी संग्रहों में कुल 27 कहानियाँ हैं । अधिकांश कहानियों में नारी पात्रों को ही प्रमुख पात्र के रूप में चित्रित किया है । लेकिन ' ग्लेशियर से ' इस कहानीसंग्रह की कुछ कहानियों में नारी पात्र ही नहीं हैं । कुछ कहानियाँ ऐसी हैं, जो आत्मकथन शैली में लिखी गई हैं । अत: उसमें नारी पात्र के नाम की अपेक्षा नायिका इस संबोधन का उपयोग किया गया है ।

3.5 ' ग्लेशियर से ' के नारी पात्र -

' ग्लेशियर से ' कहानीसंग्रह में कुल मिलकर सोलह कहानियाँ संकलित हैं । कुछ कहानियों में नारी पात्रों का नामोल्लेख किया है, तो कुछ कहानियाँ आत्मकथन शैली में लिखने के कारण नारी को 'मैं' से संबोधित किया है । कुछ कहानियाँ ऐसी है, जिनमें नारी पात्र ही दिखाई नहीं देते है । ' ग्लेशियर से ' कहानीसंग्रह में निम्नांकित नारी पात्रों का चित्रण किया है ।

3.5.1 ' ग्लेशियर से ' की उषा भटनागर अथवा मिसेज दत्ता -

' ग्लेशियर से ' कहानी के प्रमुख नारी पात्र का नाम उषा भटनागर था, लेकिन शादी के बाद वह मिसेज दत्ता बन गई है । मिसेज दत्ता एक पढ़ी-लिखी आधुनिक नारी होने के बाद भी उसके विचारों में श्यामला पुरी जैसी आधुनिकता दिखाई नहीं देती । श्यामला पुरी उषा की बचपन की सहेली है, जो उससे अधिक प्रेम करती है । उषा बात-बात पर बेताब होती थी, लेकिन आज उसकी यह आदत छूट गई है । श्यामला जैसे स्वच्छंदी विचार उषा को पसंद नहीं थे । वह भी आम लड़कियों की तरह शादी करके अपना घर बसाना चाहती थी । इसलिए वह मिस्टर दत्ता से शादी करती है । उषा पारंपरिक विचारों, रितीरिवाज आदि को माननेवाली नारी है । जब श्यामला पुरी चाहती है कि दोनों मिलकर इसी तरह पहाड़ों पर रहकर मधुमक्खियाँ या भेड़ पालकर जीवन बिताए, तो यह बात उषा भटनागर को पसंद नहीं आती वह कहती है - '' नहीं - नहीं, कैसे होगा ? न- न, मुमकिन नहीं है यह होना . . . कोई भी तो ऐसे नहीं जाता . . . हमारे जानने वालों में . . . कोई भी तो नहीं . . . ''[5]

इस तरह आधुनिक पढ़ी लिखी नारी होने के बाद भी वह अपने रीतिरिवाजों, परंपराओं को अपनाने वाली नारी है । ' ग्लेशियर से ' कहानी में वह अपने पती के साथ ग्लेशियर के पहाड़ों की सैर करने के लिए आई है । लेकिन वह अकेली ही ग्लेशियर की सैर करती है । इसके पहले भी वह ग्लेशियर की सैर श्यामला के साथ के साथ कर चुकी है ।

3.5.2 ' ग्लेशियर से ' श्यामला पुरी -

' ग्लेशियर से ' इस कहानी में मिसेज दत्ता के साथ और एक नारी पात्र का चित्रण किया है - जिसका नाम श्यामला पुरी है । श्यामला उषा की कॉलेज की सहेली है । वह उषा से बहुत प्रेम करती है । उन दोनों में अच्छी दोस्ती है । लेकिन एक दिन अचानक श्यामला बी.ए. की कक्षा छोड़कर चली जाती है ।

श्यामला एक आजाद खयालों की, स्वतंत्र, स्वच्छंद विचारों की, विवाह को एक निरर्थक बंधन माननेवाली लड़की है । श्यामला के परिवेश एवं रहन-सहन के बारे में मृदुला गर्ग लिखती हैं - '' श्यामला बहुत लंबी थी, देवदार की तरह । ढीला कुर्ता और पाजामा पहना करती थी । दुपट्टा ओढ़ती तो चलते-फिरते रास्ते में कहीं गिर जाता . . . चलती तो थी नहीं श्यामला, दौड़ती थी, इस पगलाई हवा की तरह . . . पागल नहीं तो क्या कहते उसे . . . ।''[6] उसके स्वच्छंद विचारों के कारण सब लोग उसे पागल कहते थे।

श्यामला उषा के साथ पहाड़ों पर छोटा-मोटा व्यवसाय कर स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है । लेकिन उषा को यह अनहोनी बात लगती है, क्योंकि आज तक किसी ने भी ऐसी जिंदगी नहीं बितायी । श्यामला को घर की चारदीवारी में कैद जिंदगी पसंद नहीं है । शादी करके वह पति को अपना परमेश्वर मानकर जीवन नहीं बिताना चाहती, इसलिए वह कहती है - '' हर औरत के लिए मुनासिब नहीं है कि वह अपने से एक चौथाई दिमागवाले आदमी से शादी करके उम्रभर उसके कहे जुमले दुहराती हुई जिये जो उसने बासी किताबों से चुराये हों । ''[7]

इस तरह ' ग्लेशियर से ' कहानी में उषा और श्यामला के माध्यम से दो विरोधी विचारों की नारियों का चित्रण किया है । उषा पारंपरिक विचारों, रूढ़ि, परंपराओं तथा शादी को आवश्यक माननेवाली नारी है, तो श्यामला स्वच्छंद विचारों वाली, विवाह को निरर्थक बंधन माननेवाली नारी हैं ।

3.5.3 ' झूलती कुर्सी ' की शेफाली -

' ग्लेशियर से ' इस कहानीसंग्रह की दूसरी कहानी ' झूलती कुर्सी ' की नायिका शेफाली है । यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है । फिर भी कहानी में एक जगह नायिका के नाम का उल्लेख मिलता है ।

शेफाली इंडियन एयरलाइन्स में नौकरी करनेवाली एक पढ़ी-लिखी युवती है। शेफाली को कॉलेज के दिनों में अभिनय का शौक था । कॉलेज के समय में उसने पने मित्र मोहन के साथ 'कांचनरंग' नामक नाटक में अभिनय भी किया था । लेकिन आज कल उसने अभिनय करना कम किया है ।

शेफाली को एक युवक से प्यार हो गया है । हर वक्त वह अपनी बाल्कनी में झुलती कुर्सी पर बैठकर उसका इंतजार करती रहती है । शेफाली को सादगी बहुत पसंद थी । इसलिए वह एक सीधे-सादे कलाकार से प्रेम कर बैठती है । कलाकार होने के कारण उसके आवाज में गजब का उतार-चढ़ाव रहता था । इसलिए शेफाली कहती है - '' मेरी नाम लेकर पुकारता तो तीन अक्षर कहते-कहते, तीन सुर बज उठते । मंच पर गाता तो अलाप लेते ही लगता, कक्ष के हर कोने में आर्केस्ट्रा बज उठा है ।''[8]

शेफाली को एकांत प्रिय था, लेकिन फिर भी वह अपने प्रेमी को रैम्बल रेस्तरे में मिलने बुलाती है । क्योंकि उसका मानना है सच्चा एकांत सिर्फ भीड के बीच मिल सकता है । शेफाली शादी करना चाहती है । उसके कॉलेज की सभी सहेलियों की शादियाँ हो चुकी हैं ।

इस तरह शेफाली का चित्रण इस कहानी में एक पढ़ी-लिखी, नौकरी करनेवाली युवती के रूप में पाया जाता है ।

3.5.4 ' तुक ' की मीरा -

' तुक ' कहानी की नायिका मीरा को पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है । मीरा के पति का नाम नरेश है, जो स्टेट बैंक में चीफ अकाउंटैण्ट है । मीरा अपने पति से अत्याधिक प्रेम करती है । मीरा की शादी को छह महीने हो चुके हैं । मीरा नरेश को हर तरह से खुश रखने का प्रयास करती है ।

नरेश के कहने पर दस दिनों में मीरा गाड़ी चलाना सीख लेती है । नरेश की बहुत इच्छा थी, कि मीरा ब्रीज खेलना सीख ले । इसलिए हर रोज वह मीरा को अपने साथ खेल देखने ले जाता । नरेश की बहुत कोशिशों के बाद भी मीरा ब्रीज का खेल नहीं सीख पाती ।

मीरा दिखने में काफी सुंदर थी । अत: नरेश को क्लब जाने से रोकने के लिए वह अपनी सुंदरता का प्रयोग करती थी । इतना सब करके हफ्ते में दो-तीन दिन उसे क्लब जाने से रोक लेती थी । नरेश जब ब्रीज के खेल में हार जाता था, तो उसका सारा गुस्सा वह मीरा के शरीर पर उतारता था ।

मीरा अपने पति नरेश के पसंद के अनुसार हर वक्त अपने आप को बदलती रहती है । एक दिन वह शुद्ध भारतीय, घरेलू स्त्री का रूप धर लेती है । वह कहती है, - '' मैंने उस समय भारी जरीदार सिल्क की साड़ी पहन रखी थी और ढेर सारे जेवर भी । माथे पर लाल बिन्दी और मांग में सिन्दूर दपदपा रहा था । नकली बालों के सहारे, मैंने अपने छोटे कटे बाल ढीले-ढाले जूड़े में सहेज रखे थे । मेरे पति

नरेश को यह रूप बहुत पसंद है । उसे इसमें एक ठोस घरेलूपन दिखलाई देता है जो उसके स्वामित्व और मेरे पालतूपन पर मुहर लगता है। ''[9]

नरेश के बहुत प्रयास के बाद भी मीरा ताश का खेल नहीं सीख पाती । तब उसे लगता है, कि वह कभी भी नरेश को खुश नहीं कर सकती । वह अपने आप को बेवकूफ मानती है । वह कहती है - '' मैं उन बेवकूफ औरतों में से हूँ जो अपने पति को प्यार करती हैं या यह कहना चाहिए कि मैं ही एक वह बेवकूफ औरत हूँ जो . . . . ।''[10]

इस तरह ' तुक ' कहानी में मीरा एक आदर्श भारतीय नारी, आदर्श पत्नी, बनने की जी-तोड़ कोशिश करती है । अपने पति से बहुत प्यार क़रती है, और उसकी हर इच्छा पूरी करके उसे खुश रखने का प्रयास करती है ।

3.5.5 ' होना ' की वह

' होना ' यह कहानी आत्मकथन शैली में लिखी कहानी है । इसमें नायिका को ' वह ' से संबोधित किया गया है । वह एक पढ़ी-लिखी औरत है, जो कॉलेज में पढ़ाने का काम करती है । उसकी शादी हो चुकी है, लेकिन शादी से पहले वह एक पुरुष से प्यार करती थी, और आज भी करती है । वह उसे छोड़कर चला गया है, फिर भी वह दोनों खत के माध्यम से अपने प्रेम को प्रकट करते रहते हैं । एक-दूसरे से दूर रहकर भी एक-दूसरे का जीवित होना ही उनके लिए जीने का सहारा है।

वह आज भी उसके खत का इंतजार कर रही है । उसका खत मिलना इस बात का प्रमाण है, कि कहीं- न-कहीं वह सही सलामत है । उन दोनों ने अपने मरने की खबर एक-दूसरे तक पहुँचाने का प्रबंध पहले ही कर दिया था । - '' वैसे उसने वचन दिया था, वह कुछ ऐसा इन्तजाम कर रखेगा, जिससे उसके मरने की खबर उस तक पहुँच सके । कैसे होगा वह, उसे शक था ।''[11]

इस तरह वह अपने पति होते हुए भी अपने प्रेमी से आज भी संबंध रखती है । आज भी उसे वह बहुत प्यार करती है और उसी के खत के इंतजार में है ।

3.5.6 ' उल्टी धारा ' की प्रेमा

' उल्टी धारा ' इस कहानी में भारत चीन युद्ध के दरम्यान के एक प्रसंग का वर्णन किया है । इस कहानी में प्रेमा नामक एक नारी पात्र चित्रित किया है, जो श्यामसिंह की पत्नी और गांधीजी की शिष्या थी ।

प्रेमा श्यामसिंह से पहले प्यार नहीं करती थी । प्रेमा का खयाल था कि मुझे अपनी जमीन-जायदाद, ओहदा छोड़कर आजादी के लिए लड़ना चाहिए । गांधीजी की शिष्या होने के कारण वह खादी

की साड़ी पहनती थी । खद्दरधारियों के गीत गाती थी । उसे श्यामसिंह का शिकार खेलना और घुड़सवारी करना पसंद नहीं था ।

बाद में प्रेमा के बर्ताव में परिवर्तन होता है और उसके विचार भी बदल जाते हैं । अब वह खादी की साड़ी की जगह रेशम की साड़ी पहनती है । अंग्रेजी में बात करती है, और घुड़सवारी और पोलो के खेल की तारीफ करती है ।

इस तरह प्रेमा पहले तो गांधीजी के तत्वों के अनुसार चलती है । सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन को अपनाती है, लेकिन बाद में वही प्रेमा आधुनिक बन जाती है । गांधीजी के तत्वों को वह छोड़ देती है ।

3.5.7 ' खरीदार ' की नीना

' खरीदार ' कहानी के नारी पात्र का नाम नीना है । नीना एक पढ़ी-लिखी, अविवाहित, नौकरीपेशा नारी है । नीना के पास शारीरिक सौंदर्य की कमी थी, लेकिन बुद्धिमत्ता के बल पर वह आय.ए.एस. पास करके सहायक कमीशनर बन जाती है । कुछ वर्षों में पदोन्नति होकर वह गृह-मंत्रालय में संयुक्त सचिव के पद पर पहुँचती है । कॉलेज के समय ही नीना की माँ दहेज देकर नीना की शादी करना चाहती थी । लेकिन नीना शादी करने से इनकार कर देती है । तब नीना की माँ उसे समझाते हुए कहती है, ''यह तो दुनिया का कायदा है । पहले-पहल लड़की की सुरत देखी जाती है और लड़के की कमाई । बाद में सब ठीक हो जाता है । तेरी तरह जिद करती तो आधी लड़कियाँ कुंआरी ही रह जाती ।''[12]

नीना को लगता है कि पूरी दुनिया दो गुटों में बंटी है - विक्रेता और खरीदार । वह तै कर लेती है कि वह विक्रेता नहीं खरीदार बनेगी । नीना एक कर्मकुशल विवेकशील, दृढ़निच्छयी स्त्री है । मैसूर के एक छोटे कस्बे में सहायक कमिशनर बनकर जाने पर सबसे पहली मुलाकात वहां के ए.एस.पी. साहब से हुई थी । ए.एस.पी. साहब दुबली-पतली बदसुरत लड़की को एक औरत समजकर कमजोर मान रहे थे ।

मैसूर में ए.एस.पी. के साथ दुबली-पतली, नीना घोड़े पर बैठकर लम्बडियों के तांडे पर सबसे पहले पहुँचती है । जीप आगे ले जाकर दंगाइयों को चेतावनी देती है । अचानक एक पत्थर आकर लगने से वह बेहोश हो जाती है । अस्पताल में होश आने पर वह पहला सवाल पूछती है - '' गोली तो नहीं चलानी पड़ी । ''[13] वह कट्टर अहिंसावादी है, और स्वयं गोली खाकर भी ए.एस.पी. को गोली चलाने का हुक्म नहीं देती ।

नीना का प्रेमी कवि है, जिसका नाम सुनिल है । आज नीना के पास गाड़ी है, बंगला है, नौकर-चाकर है, और जो नहीं है, उसे वह कभी भी पा सकती है । वह सुनिल को जब चाहे तब अपने पास

बुलाकर रख सकती है । पहले जैसा मामला यहाँ नहीं है कि बीस-तीस हजार में दूल्हा खरीदो और जीवन भर उसकी चाकरी करते रहो । अपने कर्तव्य से वह संयुक्त-सचिव बनी है और जब चाहे तब दूल्हे खरीद सकती है ।

इस तरह नीना यह एक पढ़ी-लिखी, अविवाहित युवती है । वह सहायक कमीशनर के साथ ही एक कर्मकुशल, विवेकशील, कार्यतत्पर, कर्तव्यनिष्ठा, अहिंसावादी नारी के रूप में चित्रित की गई है ।

3.5.8 ' खाली ' की निर्मला

' खाली ' कहानी की नायिका निर्मला एक पारिवारीक नारी है । उसे तीन लड़के हैं, जो कॉलेज में पढ़ते हैं, और उसके पति दफ्तर में काम करते हैं । निर्मला घर में ही रहती हैं । घर के सारे काम निपटाकर वह पड़ोस की औरतों के दुखड़े सुन, उन्हें तसल्ली और नसीहत देने में अपना बाकी सारा समय बितानी है ।

पति सुबह दफ्तर में और लड़के कॉलेज चले जाते हैं, तो सारा दिन वह घर में अकेली रह जाती है । शाम को वह लौटते हैं, तो अपने-आप में, अपनी ही बातों में व्यस्त रहते हैं । इस तरह निर्मला का जीवन सूनी-सपाट स्थिर गति से रेंगता चला जा रहा है । वह कहती है - " तब सहसा, वह सोच उठती है, उसके घर में न झटके लगते हैं, न जलजला आता है, बस, सूनी-सपाट मैदानी सड़क पर वह स्थिर गति से रेंगती रहती है । तब ज्वालामुखीवाले घरों से उसे ईर्ष्या-सी हो जाती है । "[14]

निर्मला अपनी इस सूनी-सपाट जिंदगी से ऊब गई । इस कारण दूसरों के घरों की औरतों की समस्याएँ सुलझाना, उनके छोटे बच्चों को संभालना, पड़ोसियों के बच्चों के लिए अच्छी आया का इंतजाम करना, पड़ोसियों के यहां खाना बनाकर भिजवाना और उनके पति से अपने खाने की तारिफ सुनना निर्मला को बहुत पसंद था । इसलिए जब दो महिने के बाद ऊपर के खाली मकान में नए किरायेदार आ जाते हैं, और सामान के साथ पहले जब औरत आती है, तब उसे बहुत खुशी होती है ।

निर्मला में और उस नई पड़ोसिन में बहुत फर्क है। निर्मला एक पारिवारिक नारी है, तो वह एक कामकाजी, पढ़ी-लिखी आधुनिक नारी है । इस कारण जब निर्मला उससे पहली बार मिलने चली जाती है, तब वह निर्मला का मजाक उड़ाती है । निर्मला को उसके बर्ताव से रोना आ जाता है । तब उसके मन में विचार आता है - " इससे तो ऊपर वाला मकान खाली ही पड़ा रहता तो अच्छा था । सच, औरत को औरत जात से इस तरह विश्वासघात नहीं करना चाहिए । "[15]

' खाली ' कहानी में निर्मला एक पारिवारिक, संवेदनशील, भावुक, सेवाभावी नारी के रूप में चित्रित हैं ।

3.5.9 ' खाली ' की वह

' खाली ' कहानी में निर्मला के साथ और एक नारी पात्र दिखाई देता है । कहानी में कहीं पर भी उस औरत के नाम का उल्लेख नहीं पाया जाता। अत: पूरी कहानी में उसका ' वह ' कहकर ही उल्लेख किया गया है ।

' खाली ' कहानी की वह एक पढ़ी-लिखी आधुनिक विचारों की, कामकाजी नारी है । वह अपने पति के साथ निर्मला के ऊपरी मंजिल के मकान में रहने आती है । निर्मला के और उसके विचारों में काफी फर्क दिखाई देता है । उसे किताबों से अधिक लगाव है । इसलिए काफी किताबें वह अपने साथ लायी है । उसे फुलदान में फूल सजाने में अधिक रूचि है । अत: नए मकान में आने के बाद सामान खोलने की अपेक्षा वह फुलदान सजाने में लग जाती है ।

उसके पति का नाम दिनेश है । उसके शादी को पांच साल हो गए हैं, लेकिन अब तक उसे कोई बच्चा नहीं है । दोनों पति-पत्नी नौकरी करते हैं, इस लिए वह अभी बच्चे को जन्म देना नहीं चाहती है । ना ही वह अपने बच्चे को किसके सहारे या आया के पास छोड़ना चाहती । इसलिए निर्मला से वह कहती है - '' जब पैदा करूँगी तो पालूंगी भी खुद ही । पालने को मन है, इसलिए पैदा करूंगी न । न हुआ तो दफ्तर छोड़-छाड़कर अलग करूंगी । ''[16]

वह स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं मानती । घर की जिम्मेदारी निभाना तथा घर के हर काम में स्त्री के साथ बराबर हाथ बंटाना पुरुष का कर्तव्य है, ऐसा वह मानती है । नए घर में सामान लगाने में जब उसके पति दिनेश की जरा भी मदद नहीं होती, तब वह दिनेश से रात का खाना बनावाना चाहती है ।

इस तरह वह निर्मला से बिलकुल अलग, नारी के रूप में चित्रित की गई है । वह एक आधुनिक विचारोंवाली, पढ़ी-लिखी, दफ्तर में काम करनेवाली, स्वच्छंद विचारोंवाली, स्त्री-पुरुष को समान माननेवाली नारी है ।

3.6 ' शहर के नाम ' के नारी पात्र -

' शहर के नाम ' कहानीसंग्रह में कुल मिलाकर ग्यारह कहानियाँ हैं । इस कहानीसंग्रह की अधिकांश कहानियों में नारी पात्रों का नामोल्लेख मिलता है । ' अक्स ', ' संगत ', ' विलोम ', ' शहर के नाम ' आदि कहानियाँ आत्मकथन शैली में लिखी गई हैं, अत: इन कहानियों के नारी पात्रों का चित्रण नायिका इस संबोधन से किया गया है । ' ग्लेशियर से ' कहानीसंग्रह की कुछ कहानियाँ नारी-पात्र

विरहित हैं, लेकिन ' शहर के नाम ' इस कहानीसंग्रह के हर कहानी में नारी पात्र पाए जाते हैं । ' शहर के नाम ' कहानीसंग्रह में निम्नांकित नारी पात्रों को चित्रित किया है ।

3.6.1 ' तीन किलो की छोरी ' की शारदाबेन

' तीन किलो की छोरी ' कहानी में कुल मिलाकर पाँच नारी पात्र हैं। इसमें ' मोटीबेन ' नामक नारी पात्र का सिर्फ शारदाबेन के माध्यम से उल्लेख किया है और बाकी तीन नारी पात्रों में लल्लीबेन, मनुबेन तथा नन्नीबेन आदि के माध्यम से निम्नवर्गीय नारियों की स्थिति का अंकन इस कहानी में किया गया है।

इस कहानी के प्रमुख नारी पात्र के रूप में शारदाबेन का चित्रण किया है । शारदाबेन एक निम्नवर्गीय अल्पशिक्षित नारी है । वह गाँव में दाई का काम करके महीना सौ रूपया कमाती है । शादराबेन दाई नहीं, अपने को ग्रामसेविका कहलाना पसंद करती थी । सभी ग्रामसेविकाओं में उसे अव्वल ठहराया जाता । शारदाबेन खूब चटर-पटर बतियानेवाली औरत है ।

शारदाबेन वनकर जात की है । शारदाबेन की दो संतानें हैं, एक लड़का और एक लड़की । महीना सौ रूपये कमाने पर भी शारदाबेन का पति उस पर धौल जमाता था । मार-पीट करना पति का अधिकार है, ऐसी शारदाबेन की धारणा है । अपने लड़के को पढ़ा-लिखाकर बड़ा बनाने की शारदाबेन की इच्छा है । इसलिए वह अपने बेटे की पढ़ाई और खाने-पीने में कोई कसर नहीं रखती ।

शारदाबेन का हिसाब कच्चा नहीं था । इस लिए सभी ग्रामसेविकाओं में वह अव्वल ठहराई जाती थी । लेखिका कहती है - '' तभी न, तमाम ग्रामसेविकाओं में अव्वल ठहराई जाती है हमेशा । काम के मामले में न हँसीठठ्ठा, न कोर-कोताही । नंगा तुलना है बच्चा तो नंगा तुलेगा . . . । ''[17]

शारदाबेन सेण्टर का सारा हिसाब-किताब पूरा करके वनकरों की बस्ती की तरफ चली जाती है । सेव्टर में जो बुखार-दरद की दवा रहती है, उसकी के भरोसे वनकरों के हारी-बिमारी का इलाज शारदाबेन करती है । अत: वनकर जाति के लोग उसे अपनी जाति की न होकर ऊँची जात की है ऐसा मानते है । वही उनकी डॉक्टर है । लोग उसे बहुत इज्जत देते हैं। जब भी कोई उसे इलाज के लिए बुलाने आते है, तो वह तुरंत वहाँ पहुँच जाती है । शारदाबेन लड़का-लड़की में कोई भेद नहीं मानती । इस तरह शारदाबेन एक कार्यकुशल, कर्तव्यतत्पर, संवेदनशील नारी के रूप में चित्रित की गई है ।

3.6.2 ' तीन किलो की छोरी ' की लल्लीबेन

इस कहानी में लल्लीबेन एक गौण नारी पात्र के रूप में चित्रित है । लल्लीबेन एक निम्नवर्गीय, अशिक्षित, ग्रामीण नारी है । उसने तीसरी बार भी एक बेटी को जन्म दिया है । उसकी सास मनुबेन और

पति बेटी के जन्म के लिए उसे ही जिम्मेदार मानकर कोसते रहते हैं । बेटे के लिए लल्लीबेन ने बहुत से व्रत-उपवास किये, मन्नत-मनौती माँगी, लेकिन उसे बेटा नहीं हुआ । तब वह अपने किस्मत को कोसती रहती है । बेटी के जन्म के तुरंत बाद उसकी सास मनुबेन उसे काम पर लगवाती है ।

इस तरह लल्लीबेन एक अशिक्षित, ग्रामीण, निम्नवर्गीय पीड़ित, पति और सास के अत्याचारों को सहनेवाली नारी है ।

3.6.3 ' तीन किलो की छोरी ' की मनुबेन

मनुबेन भी एक गौण नारी पात्र है । लल्लीबेन की सास के रूप में मनुबेन का इस कहानी में चित्रण किया गया है । मनुबेन अपनी बहु से अपने घर के लिए एक बेटा चाहती है । लेकिन जब तीसरी बार भी लल्लीबेन एक लड़की को जन्म देती है, तो वह उसे बहुत ही भला-बुरा कहती है । भैसों का निकाला सारा दूध डीपो भिजवाकर पास ही बैठकर बीड़ी सुलगाकर उसक कश भरने लगती है । इसलिए लेखिका मनुबेन के बारे में लिखती है - '' छोरा होता तो मनुबेन सारा-का-सारा दूध डीपो बिकने ना भेजती । कुछ जरूर बचाकर रख लेती, घी बनाने को । . . . . . मनुबेन का बस चले तो गला ही घोंट दे छोरी का । ''[18]

मनुबेन इस कहानी में एक पारंपरिक विचारोंवाली, लड़का-लड़की में भेद करनेवाली एक निम्नवर्गीय नारी के रूप में चित्रित की गई है ।

3.6.4 ' तीन किलो की छोरी ' की नन्नीबेन

' नन्नीबेन ' यह लल्लीबेन के पड़ोस में रहनेवाली औरत है । उसने भी एक लड़के को जन्म दिया था । लेकिन घर की आर्थिक स्थिति को देखते हुए नन्नीबेन अपने एक हफ्ते पहले जन्में लड़के को घर में छोड़कर ट्रक पर खाद के बोरे लादने के काम पर चली जाती है । बीमार बच्चे की तरफ ध्यान देने के लिए समय न मिलने के कारण वह अपने बेटे को खो देती है । घर में भैंस होते हुए भी वह अपने बेटे को दूध नहीं पिला पाती, क्योंकि भैंस खरीदने के लिए चार हजार का कर्ज लिया था, और हर महीने उसकी किस्त चुकानी पड़ती है । इसलिए वह काम पर चली जाती है, और अपने बेटे को खो देती है ।

नन्नीबेन एक गरीब, लाचार, परिश्रमी, संवेदनशील माँ के रूप में इस कहानी में चित्रित हो गई है ।

3.6.5 ' करार ' की चैरी

चैरी नामक एक अमेरिकन लड़की इस कहानी में प्रमुख नारी पात्र है । चैरी युनीसेफ की तरफ से पारंपरिक जल-संचय व्यवस्था पर प्रोजेक्ट कर रही थी और उसी सिलसिले में हिंदुस्थान आयी थी । वह

तीसरी पीढ़ी की अमरीकन है । उसके दादा चीन से भागकर अमरीका आये थे और वहाँ के नागरीक बन गये थे । स्वयं वह चीन कभी नहीं गई थी और हिंदुस्थान पहली बार आयी थी ।

चैरी जब भारत में आ जाती है, तब यहाँ के रहन-सहन, वातावरण, रीति-रिवाजों को वह अपनाती है । यहाँ पर आने के बाद वह सलवार-कमीज पहनती है । सर्द देश से आकर भी वह रेगिस्तान में नंगे पाव चलती है । इससे उसके पैरों में फफोले पड़ जाते हैं।

भारत के गाँवों के बारे में काफी रुमानी बातें उसने सुन रखी थीं । अत: इसी उत्सुकतावश वह यत्र-तत्र गाँवों में जाकर ' पानी की खेती ' देखना-चाहती थी । साथ ही वह गाँववालों की मेहमाननवाजी देखना चाहती थी । गाँव में पहुँचने के बाद वहाँ के कुएँ का पानी पीने में चैरी को हिचक महसूस होती है । बाद में चैरी कुएँ की जगत पर जमा राहत-मजदूरों की फोटो खींच लेती है ।

चैरी श्रद्धालू है, इसी कारण पाबूजी के ओरण को वह श्रद्धा के साथ हाथ जोड़ती है । लेकिन वह अंधविश्वासी नहीं है । इसलिए तो वह कहती है - '' नियति ! नियति, धर्म, अंधविश्वास ! इनसे उबरकर कभी बाहर आ पाओगे तुम लोग । यह धार्मिक स्थल है । इसलिए यहाँ के पेड़ छाँटे तक नहीं जा सकते, जबकि और जगह सरकार जंगल-के-जंगल काटती जा रही है । ''[19]

चैरी को भारतीय गाँव, यहाँ के लोग, मंदिर, भगवान के प्रति लोगों का अटूट विश्वास यह सब बहुत भा गया और इसलिए वह अपने देश अमरिका वापस जाना नहीं चाहती । वह भारत में रहकर भारतीय प्रकृति और लोगों को जानना चाहती है ।

3.6.6 ' अक्स ' की मैं अर्थात कहानी की नायिका

' अक्स ' कहानी की नायिका एक यूरोपीय युवक से प्रेम करती थी और उस युवक के प्यार में वह किसी और से शादी नहीं करना चाहती थी । दो-चार साल में वह नौकरी करके पैसे जमा कर यूरोप जाना चाहती थी, लेकिन वह पैसे जमा नहीं कर पाती । इसी बीच माँ-पिताजी दोनों स्वर्ग सिधार जाते हैं, और उसके भैया-भाभी उससे मुँह फेर लेते हैं।

मैं फिर भी एक बार उस युवक से मिलाने यूरोप जाना चाहती है, ताकि वह उस युवक से मिलकर अपने प्यार को पा सके । यूरोप जाने के बाद अगर उसका मोहभंग हो गया तो वह किसी एक अदद दुनियादार आदमी को पकड़कर उससे शादी कर लेगी और बाकी औरतों की तरह वह एक घरेलू स्त्री की जिंदगी बसर करेगी । उसके प्यार के भ्रम को दूर कर वह अपनी जिंदगी बिताना चाहती है । उसके प्यार को पाने के लिए उसने अब तक शादी नहीं की । बहुत लोग आते थे उसे देखने और वह भी सज-धजकर

बैठती थी, उनके सामने, लेकिन उन सबकी आँखों में वह अपने प्रेमी को ही ढूँढती थी । इसी कारण अब तक उसकी शादी नहीं हो पायी ।

दस-पंद्रह साल के बाद आज भी यूरोप जाकर एक बार उससे मिलना चाहती है । वहाँ उसे ढूँढते हुए वह बहुत से लोग के कंधे पर अपना हाथ रख देगी और उसके होने का वहम टूट जायेगा । इसलिए नायिका कहती है - " यह एक बार नहीं, बार-बार होगा । इतनी बार मुझे औरों में उसके होने का वहम होगा कि उसके अलहदा और सिर्फ मेरे लिए होने का वहम टूट जाएगा । मैं आजाद हो जाऊँगी । लौट जाऊँगी अपने देश, अपने दफ्तर, अपनी सीमित धरती पर जीने । "[20]

नायिका अपने प्रेमी के हरे रंग को ढूँढकर थक जाती है, लेकिन वह मैं को नहीं मिलता और अंत में नायिका की आँखों का ही रंग हरा बन जाता है । नायिका अपने प्रेमी को पाने में असफल बन जाती है ।

3.6.7 ' अनाड़ी ' की सुवर्णा

' अनाड़ी ' कहानी में सुवर्णा नामक एक काम करनेवाली छोटी लड़की का चित्रण किया है । सुवर्णा बारह साल की छोटी लड़की है । सुवर्णा बारह साल की छोटी लड़की है । यह उम्र तो उसकी पढ़ने-लिखने की है, लेकिन उसके बप्पा का काम छुटने के कारण सुवर्णा पढ़ाई छोड़कर माँ के साथ बर्तन मलने का काम करती है । उसका भी मन करता है कि, स्कूल जाए, साथ के सहलियों से खेले, झूला झूले, बिस्कुट-दूध खाए, लेकिन यह सब उसके नसीब में नहीं था ।

सुवर्णा नई-नई बम्बई आयी तो बाई के घर में काम करती थी । सुवर्णा की बाई मराठी नहीं जानती, लेकिन सुवर्णा थोड़ी बहुत हिंदी जानती है । बाई के साथ वह जान-बुझकर मराठी बोलती है । सुवर्णा बड़े मालिक लोगों के लाड़-प्यार को खूब समझती है । सुवर्णा को बेचारी सुनना अच्छा नहीं लगता । सुवर्णा होशियार है, इसलिए मालिकों के घर जो भी मिलता, फौरन लेती है ।

सुवर्णा को अपनी बाई की तरह साज सिंगार करना अच्छा लगता है । लाली-पाउडर लगाने की अपेक्षा उसे नाखूनों को रंग देना अधिक पसंद है । सुवर्णा अपनी माँ से ऐसी चीजे माँग लेती, तो उसकी खूब पिटायी होती है ।

सरकारी नौकरी करनेवाले लोगों की तरह सुवर्णा को भी लगता कि उसे भी इतवार को छुट्टी मिल जाय । लेकिन इतवार को छुट्टी मिलने की अपेक्षा उसे अधिक काम करना पड़ता था । सुवर्णा को लगता था कि, बाई वह कुछ भी कहे लेकिन दूसरी कामवाली न मिलने के डर से उसकी हर बात सह लेगी । इस विचार से एक दिन वह सोफे पर बैठकर बिस्कुट खाती हुए छायागीत देखने लगती है । जब

बाई देखती है, तो उस पर बहुत क्रोधित होती है, और खींचकर उसे सोफे से उठाकर घसीटती हुई बाहर ले जाने लगती है । सुवर्णा की हाथ छुड़ाने की कोशिश जब बेकार हो जाती है, तब वह चिल्लाकर कहती है - '' कल से नई आऊँगी काम पर । ''[21] उसे लगता है कि, उसकी बात सुनते ही बाई हाथ छोड़ देगी । लेकिन ऐसा नहीं होता और अनाड़ी सुवर्णा को अपने काम से हाथ धोना पड़ता है ।

3.6.7 ' चकरघिन्नी ' की लेखा

' चकरघिन्नी ' कहानी में मुख्य रूप से दो नारी पात्रों का चित्रण है । इसमें पहले नारी पात्र का नाम लेखा है, जो विनीता की माँ है ।

लेखा दिल्ली के नामी पंत अस्पताल में हृदयरोग विशेषज्ञ के रूप में काम करती है । लेखा के पति भी बाल विशेषज्ञ थे । लेखा अपने पति से खुश थी, और उन्हें प्यार से वह विदूषक कहती थी । विनीता लेखा की एकलौती बेटी थी । उसे वह अपनी तरह हार्ट स्पेशालिस्ट बनाना चाहती थी ।

लेखा विनिता को ज्यादा दिन स्तनपान नहीं करा सकती थी । पहले ही महीने में अस्पताल में एक बेढ़ब केस आया था और लेखा विनिता को आया के हवाले कर गई थी । लौटने पर उसने अपना दूध सूखा दिया था । लेखा अपने मरीजों का नुकसान नहीं कर सकती थीं ।

जब विनीता आठ बरस की होती है, तो लेखा को यह चिंता सताने लगी थी, कि दूसरा बच्चा न होने पर, पति के बाद क्लिनिक का क्या होगा ? जब विनीता बारहवीं कक्षा में आ जाती है, तब लेखा उसे मेडिकल कॉलेज भेजना चाहती है । लेकिन विनीता के अपने प्रति विचार देखकर लेखा अपने विचार उस पर नहीं थोपती ।

लेखा रिटायर होने के बाद घर पर ही रहने लगती है । आज भी वे दोनों पति-पत्नी एक दूसरे का साथ पाकर बहुत खुश हैं। रिटायर होने के बाद भी वह हफ्ते में छह-सात घण्टे मेडिकल कॉलेज में पढ़ाने का काम करती है । इस कहानी में लेखा एक आदर्श पत्नी और क़र्तव्यदक्ष नारी के रूप में चित्रित की गई है ।

3.6.9 ' चकरघिन्नी ' की विनीता

' चकरघिन्नी ' कहानी में विनीता को एक बेटी और पत्नी के रूप में चित्रित किया है । दिल्ली के नामी पंत अस्पताल के हृदयरोग विशेषज्ञ लेखा की वह बेटी थी, तथा उसके पिता बाल रोग विशेषज्ञ थे । विनीता अपनी माँ को एक आदर्श माँ और पत्नी नहीं मानती थी क्योंकि आदर्श पत्नी-माँ की जो छबि फिल्मों और किताबों में मिलती थी, वह उसकी माँ की तस्वीर से भिन्न लगती थी । माँ उसे अधिक

समय नहीं दे पाती थी । इसलिए वह अपनी माँ की इच्छा के अनुसार डॉक्टर नहीं बनती । बल्कि बी.ए. करके शादी करती है ।

विनीता के पति का नाम अमित गोयल था, वह सेण्ट्रल बैंक में मैनेजर था । विनीता को माया और अजय यह दो संतानें थीं। विनीता अपनी सुरक्षित और योजनाबद्ध जिंदगी पर भरसक संतुष्ट थी । हर रोज की दिनचर्या जैसे तय थी, उसके अनुसार उसकी जिंदगी चल रही थी । विनीता एक आदर्श माँ और पत्नी बनने की जी-तोड़ कोशिश करती थी । पति और बच्चों की सारी बाते, काम वह अच्छी तरह करती थी । लेकिन एक दिन माया की बातों से वह एक आदर्श माँ नहीं बन पायी ऐसा विनीता को लगता है ।

बच्चों और पति की बातों से उसे पता चलता है कि, वे चाहते हैं कि, विनीता जॉब करे । एक दिन विनीता के टोकने पर माया तड़पकर कहती है - '' तुम हर वक्त घर पर क्यों रहती हो ? कोई जॉब क्यों नहीं करती ? मेरी सब सहेलियों की मम्मी काम करती हैं । ''[22] तब जान-बुझकर विनीता अपने पापा से मिलकर, उनके ऑफिस में रिसेप्शनिस्ट के रूप में काम करने के लिए तैयार होती है । इस तरह विनीता का घर में रहकर एक आदर्श माँ और पत्नी बनने का सपना टूट जाता है ।

विनिता के माध्यम से मृदुला गर्ग ने एक संवेदनक्षम नारी की छटपटाहट को स्पष्ट किया है । इस कहानी की आलोचना करते हुए डॉ. विजया वारद लिखती हैं, '' भविष्य के अपने वैवाहिक जीवन को लेकर युवा स्त्री कई सपने देखती है, परंतु स्वप्न और वास्तविकता में अंतर होता है, इसे मृदुला गर्ग ने प्रस्तुत कहानी द्वारा दर्शाया है । ''[23] इस तरह विनीता के माध्यम से समाज की बदलती मानसिकता को प्रस्तुत किया है ।

3.6.10 ' बाहरीजन ' की नन्दिनी

नन्दिनी ने एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म लिया है । वह बहुत सुंदर है पाँच भाई-बहनों में एक है। नन्दिनी नौकरी करती थी । लेकिन जब उसका विवाह राजेश्वर के इकलौते बेटे नितिन से तै किया जाता है, तब उसे नौकरी छोड़नी पड़ती है ।

नितिन बड़े घर का आदर्श बेटा है । घर में किसी बात की कमी नहीं है । अलीशान कोठी, नौकर-चाकर गाड़ी, ड्राइवर । अपने पति के बारे में नन्दिनी कहती है - '' नितिन पैसा कमाने नहीं, देश की प्रगति और विकास योजना को अंजाम देने के लिए एक लघु उद्योग स्थापित करने के सिलसिले में बाहर गया है । उसे उस पर गर्व होना चाहिए . . . है न ? ''[24]

नन्दिनी को पति के घर में किसी बात की चिंता नहीं । लेकिन सात साल हो गए शादी को अब तक उसे बच्चा नहीं हुआ । शुरू-शुरू में नन्दिनी डरी-डरी सी रहती थी । नन्दिनी डॉक्टरों से जांच करवाती है । डॉक्टरों की सलाह के अनुसार वह और एक साल इंतजार करना चाहती है । किसी-भी अप्राकृति प्रक्रिया का इस्तेमाल वह बच्चे को जन्म देने के लिए नहीं करना चाहती । अगर एक साल के बाद भी उसे बच्चा नहीं हुआ, तो वह बच्चा गोद लेना चाहती है । इस तरह नन्दिनी निसंतान होने के दु:ख को झेल रही है ।

3.6.11 ' बाहरीजन ' की सरिता

' बाहरीजन ' में नन्दिनी के साथ और एक नारी पात्र है, जिसका नाम सरिता है । सरिता नन्दिनी की सास और राजेश्वर की पत्नी है । सरिता को नितिन यह एक मात्र संतान है । सरिता मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुई नारी है । बाद में उसका विवाह राजेश्वर नामक धनी व्यक्ति से होता है ।

सरिता बी.ए. में फर्स्ट डिवीजन में पास हुई थी । उसकी इच्छा थी कि आगे पढ़ाई करें, नौकरी करे । लेकिन ऊँचे खानदान में शादी होने के बाद छुरी-काँटे और बिल्लौरी काँच में उलझकर रह जाती है । राजेश्वर बार-बार सरिता को ताने देते थे, कि वह मिडल क्लास में पैदा हुई है । जब बहू नन्दिनी को कोई बच्चा नहीं होता, तब वह उसका साथ देती है ।

इस तरह सरिता एक मध्यमवर्गीय घर में पैदा हुई, लेकिन ऊँचे घराने के राजेश्वर की पत्नी है ।

3.6.12 ' वह मैं ही थी ' की उमा

' वह मैं ही थी ' की नायिका उमा एक पढ़ी-लिखी विवाहिता है । उसकी दो बहने हैं। उसके माता-पिता दिल्ली में रहते हैं । शादी से पहले उमा कॉलेज में अर्थशास्त्र पढ़ाती थी ।

उमा का विवाह मनीश से हुआ है, जो एक कारखाने में नौकरी करता है । उसका तबादला बिहार के एक छोटे से कस्बे में हुआ है । उमा अपने पति के साथ उसी कस्बे में रहती है । इस समय उमा गर्भवती है, लेकिन बिहार के उस छोटे से कस्बे में स्वास्थ्य की कोई सुविधाएँ नहीं हैं । उमा अपने स्वास्थ्य एवं बच्चे के प्रति चिंतित है ।

शुरू-शुरू में उसने वहाँ की मिलनेवाली हर औरत से पूछा था - " यह कैसी जगह है कि यहाँ कारखाना है, घर है, फर्निचर है, पर अस्पताल या डॉक्टर नहीं है ? "[25] एक तो उस कस्बे में रहकर वह अपने बच्चे को जन्म नहीं दे सकती, दूसरे दिल्ली अपने माँ के पास भी नहीं जा सकती, क्योंकि महानगरीय जीवन में हर कोई अपने काम में व्यस्त होता है, इस कारण उमा की तरफ ध्यान देने के लिए किसी के पास समय नहीं था । फिर उसे लगता है कि, वह पटना जाकर किसी होटल में दस-पंद्रह दिन रहे

और दर्द शुरू होने पर अस्पताल में भर्ती हो जाए । लेकिन इसके लिए उसके पास अब पैसे नहीं थे । शादी से पहले जो भी कमाया था, वह साथ-साथ खर्च करती रही । अब वह पूरी तरह मनीश पर निर्भर है ।

बिहार के कस्बे के जिस घर में उमा का परिवार रहता है, वहाँ पहले एक गर्भवती औरत बच्चे को जन्म देते वक्त मर गई थी । उमा को लगता है, कि आज भी वह औरत भूत बनकर उस घर में भटकती है । इसी डर के मारे रात-रात भर वह सो नहीं पाती । तब वह रात काटने के लिए घर के कोने-कोने की सफाई करने लगती । उमा को लगता है कि वह उसका अजन्मा बच्चा ही था, जो अब उसकी कोख से जन्म लेनेवाला था । हर वक्त उमा को यह डर सताता कि, वह औरत उसके आस-पास ही भटकती है । इसी खौफनाक स्थिति में वह एक लड़की को जन्म देती है । बच्ची को जन्म देते वक्त उसके शरीर से काफी खून बहने लगता है । साथ ही उस औरत के भय से वह थरथराती ही चली जाती है, और अंत में उमा की मृत्यु हो जाती है ।

उमा एक पढ़ी-लिखी, कॉलेज में लेक्चरर के रूप में काम करने के बाद भी भूत-प्रेत, आत्मा आदि बातों पर विश्वास करनेवाली नारी के रूप में इस कहानी में चित्रित की गई है ।

3.6.13 'रेशम' की हेमवती

'रेशम' कहानी में प्रमुख नारी पात्र के रूप में हेमवती का चित्रण किया है । हेमवती को दो बेटे और एक पोता है । बड़े लड़के का नाम रामू और उसकी पत्नी का नाम तारा है । उन्हें शशि नामक एक लड़का है । दूसरे बेटे का नाम राजू तथा उसकी पत्नी का नाम प्रीति है । प्रीति एक वकील की बेटी है । इस तरह हेमवती का वह पति-पत्नी, दो बेटे, दो बहुएँ और एक पोता ऐसा बड़ा-सा परिवार हैं ।

हेमवती एक आदर्श पत्नी की तरह अपने पति से पैसे लेकर घर खर्च चलाती थी । फिर भी हमेशा उसके पति उसे डाँटते रहते थे । जब राजू छोटा था, तब उसने क्रिकेट के बल्ले की माँग की थी, लेकिन हफ्ते भर बाद भी जब राजू को उसके पिताजी बल्ला खरीदकर नहीं देते, तब हेमवती अपने पास के पैसों से उसे बल्ला खरीदकर देती है । तब से उनके पति ने एकमुश्त घर खर्च देना बंद किया था । रोज-सुबह हिसाब लगाकर दिनभर के खर्च को पैसे पकड़ाते थे और शाम को उनसे पूरा हिसाब तलब कर लेते थे । हर सुबह हाथ फैलाकर दस-बीस रूपये लेने में हेमवती स्वयं को भिखारिन-सा महसूस करती थी ।

आज हेमवती के घर में दो पढ़ी-लिखी बहुएँ आ गई हैं, लेकिन फिर भी हेमवती को अपने पति के सामने हर दिन घर खर्च चलाने के लिए सुबह-सुबह हाथ फैलाने पड़ते हैं । यह सब देखकर बहू तारा हेमवती को घर खर्चा ना करने की सलाह देती है, तब भी हेमवती आदर्श भारतीय पत्नी की तरह अपने

पति का ही साथ देती है । वह कहती है - '' मुझ पे हुए, बाऊजी पे हुए, एक ही बात है । यह तो पीढ़ी-पीढ़ी का फर्क है । खर्चा किसके हाथ से हो, औरत या आदमी के । ''[26]

हेमवती के लिए उसके बेटे या बहुएँ कुछ करना चाहते हैं, तब उसके पति उसे हमेशा अपमानित करते हैं, बेटों को डाँटते हैं। हेमवती अपने पति द्वारा लगाए गए नियंत्रणों एवं अंकुशों के कारण अपने बेटों और बहुओं के सामने सदा अपने को अपमानित अनुभव करती है ।

हेमवती को अपने पति की मृत्यु के बाद शोक-प्रदर्शन ' उठावनी ' के निमित्त उपस्थित स्त्रियों के समूह को देखकर यह अनुभव होता है, कि किसी भी स्त्री के चेहरे पर दु:ख और सहानुभूति का कोई चिह्न नहीं है । वह उनकी परेशानियों को दूर करने के लिए ' उठावनी ' के कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा कर देती है और सबको चाय पीकर ही जाने के लिए कहती है । उसके इस व्यवहार से वहां बैठी हुई सभी औरतों के चेहरे पर की ऊब समाप्त हो जाती है ।

हेमवती के पति के बर्ताव से अंत में उसका अपने पति के प्रति व्यवहार बदल जाता है । अपने पति की मृत्यु का जरा भी दु:ख उसे नहीं होता । अत: उन दोनों के रिश्ते में एक अजीब-सा रूखापन, ऊब निर्माण होती है । अंत: में हेमवती अपने नारी व्यक्तित्व पर लगाए गए अंकुशों एवं नियंत्रणों के विरूद्ध विद्रोह करती है ।

3.6.14 'रेशम' की तारा

तारा हेमवती के बड़े बेटे रामू की पत्नी है । वह एक बेटे की माँ भी है, जिसका नाम शेशि है । तारा का पति रामू आज्ञाकारी मातहत की तरह, पूरी तनख्वाह लाकर उसके हाथ पर रख देता था । लेकिन तारा को अपनी सास का ससुर के सामने हर रोज घर खर्च के लिए हाथ फैलाना पसंद नहीं था । इस बात के लिए उसने अपने ससुर को टोका भी था । हेमवती से भी उसने कहा था - '' आप घर में खर्च क्यों करती हैं ? मेरे पास पैसे हैं न ! ''[27]

तारा भावुक और समझदार लड़की थी साथ ही आत्मविश्वासी । ससुर के मृत्यु के बाद तारा हेमवती के लिए रेशम की साड़ी खरीद लायी थी, और जोर करके बढ़िया रेशम की सफेद साड़ी पहनवा गई थी । इस तरह तारा एक आधुनिक पढ़ी-लिखी बहू है, जिसे औरत का हर वक्त पुरुष के सामने झुकना पसंद नहीं था ।

3.6.15 'रेशम' की प्रीति

' रेशम ' कहानी में और एक नारी पात्र है, जिसका नाम प्रीति है । जो हेमवती के दूसरे बेटे राजू की पत्नी है । प्रीति एक वकील की बेटी है, अत: हर वक्त वह कानून की ही बातें करती है । वह ठीक मुँह पर दो टूक बोल मारा करती थी । उसकी बातें सबको हँसाकर छोड़ती थीं ।

प्रीति चाहती थी, कि उसके ससुर हेमवती के नाम कुछ रूपया बैंक में जमा कर दे । हेमवती की सुरक्षा के लिए प्रीति मकान में अस्थायी हक की माँग करती रही थी । उसके बार-बार कहने पर बाऊजी ने वसीयत में उनके लिए कुछ इंतजाम कर दिया था ।

जब एक दिन हेमवती के लिए राजू कूलर खरीद लाता है, और इस बात पर घर में सब के साथ अनबन हो जाती है तो कुछ दिनों बाद प्रीति और राजू अमरिका चले जाते हैं । करीब छह साल तक वह अमरिका में रहते हैं । वहाँ पर प्रीति को दो लड़कियाँ होती हैं ।

3.6.16 'विलोम' - 'मैं' अर्थात नायिका

प्रस्तुत कहानी भी आत्मकथन शैली में लिखी गई है । अत: इस कहानी की नायिका को 'मैं' के रूप में चित्रित किया गया है ।

नायिका सोलह साल बाद अपनी कंपनी के काम के लिए बंबई आयी है । सोलह साल पहले वह बंबई में ही ' कुण्डालिया अण्ड कंपनी ' में काम करती थी । दो साल के बाद उसका तबादला दिल्ली हुआ । इसी कंपनी के सभी विक्री शाखाओं की कान्फ्रेन्स थी नटराज होटल में । दफ्तर के खर्चे पर नायिका बंबई आयी थी । कान्फ्रेन्स के लिए आने के बाद रेल का किराया, होटल का खर्चा, शहर में घूमने के लिए टैक्सी किराया आदि कंपनी देती है, लेकिन नायिका अपने एक परिचित के घर ठहरती है । होटल के खर्चे के पैसे बचाकर नायिका अपने घर के लिए कुछ जरूरी सामान खरीदना चाहती थी ।

जब नायिका बंबई में रहती थी, तब वह एक लड़के से प्यार करती थी । शहर के हर जर्रे में उसे अपने प्रेमी का चेहरा दिखलाई देता था । नायिका ने प्यार किया, लेकिन अपने प्रेमी पर विश्वास नहीं कर पायी । एक दिन जब नायिका के प्रेमी ने कहा कि, वह बिहार के दुमका ज़िले के किसी गाँव में रहकर काम करना चाहता है । बँधुआ मज़दूरों के साथ रहकर उनकी समस्याओं को समझने के लिए उन्हें उनका हक दिलाने में मदद करना चाहता है। मैं उसके साथ कहीं भी चलने की हामी भरती है, लेकिन उसके साथ नहीं जाती ।

एक साल बाद किसी ने नायिका को बताया कि उसके नाम के एक आदमी को हमारी सरकार ने बिहार के किसी इलाके से गिरफ्तार किया । पाँच साल बाद अखबार में पढ़ा कि उसके नाम के एक आदमी को रिहा कर दिया गया है, पर पुलिस के पहरे में देश छोड़कर जाने पर मजबूर किया गया है ।

नायिका को बंबई शहर आज अजनबी लग रहा है । नायिका उससे प्यार तो करती थी, लेकिन उसे वह निभा नहीं पाती । उसके साथ बंबई शहर में सैर करना तो उसे अच्छा लगता है, लेकिन बँधुआ मजदूरों के साथ बिहार में रहने की जब नौबत आती है, तब नायिका अपने प्रेमी से पिछा छुडाती है ।

इसलिए नायिका कहती है - '' दुमका के उस गाँव जैसे छप्पर छजे अनेक खस्ताहाल गाँव आँखों के सामने से गुजर गए तो मैं समझी, सोलह साल पहले, उस दोपहर मैंने उसके साथ कहीं भी चलने की हामी नहीं भरी थी ; ऐलान किया था, कहीं भी उसके साथ न रह पाने का । ''[28]

इस तरह नायिका प्यार में अपने प्रेमी को छोड़ देती है, प्यार को वह निभा नहीं पाती और इस कारण आज तक वह अकेली जिंदगी बिता रही है । किसी का सच्चा प्यार वह पा नहीं सकती, या कोई साथी उसे नहीं मिलता ।

3.6.17 ' शहर के नाम ' - ' मैं ' अर्थात कहानी की नायिका

' शहर के नाम ' कहानी आत्मकथन शैली में लिखी कहानी है । इस कहानी की नायिका नायिका एक कम उम्र लड़की है । नायिका के पिता एक सरकारी अफसर है । यह कहानी 1975-76 के आपात्काल की राजनीतिक गतिविधियों से जुड़ी कहानी है । शहर के सबसे बढ़िया कॉलेज में उसके पिता पढ़ाई के लिए दाखिल करते हैं, लेकिन नायिका पढ़ाई छोड़कर मज़दूरों की झुग्गी-झोंपड़ी बस्तियों में, गली-गली जाकर नाटक किया करती थी । नायिका के पिता सरकारी अफसर होने के कारण अपनी मान-मर्यादा को लेकर चिन्तित होते हैं और एम्.एस. की पढ़ाई के बहाने अमरीका भेज देते है ।

अमरीका जाकर वह अपनी पढ़ाई के प्रति समर्पित नहीं रहती और वहाँ के सामाजिक जीवन से जुड़ जाती है । नायिका को खत लिखने का बहुत शौक था । अमरीका से वह अपनी माँ और बप्पा को हमेशा खत लिखती रहती थी । नायिका को बच्चों से भी बहुत प्यार था, कम-से-कम खुद के वह चार बच्चे चाहती थी । नायिका बहुत ही भोली थी, इसलिए अमरीका में जब उसे हैरी मिल जाता है, तब वह उससे खुद शादी की बात करती है । शादी के बाद वह अपने देश लौटना चाहती थी । लेकिन हैरी उससे शादी करने से इन्कार कर देता है ।

अमरीका में नायिका के खूब दोस्त है । हैरी के इन्कार के बाद वह अपने देश वापस आना चाहती है, वह अपने सभी दोस्तों से कह देती है, मैं वापस लौट रही हूँ अपने देश । वह अपने बप्पा से तिकीट के पैसों की माँग करती है, लेकिन बप्पा उसे वापस आने नहीं देना चाहते, इसलिए पैसे नहीं भेजते । तब वह शहर के दूषित कोने-में बसे छोटे-छोटे ढाबों में समाज की जूठन बर्तन जूठे किया करती थी । वहाँ पर आने वाले लोगों के बारे में वह कहती है - '' कितने बेबस लाचार किस्म के लोग आते हैं यहाँ । दो दिन काम किया और गायब । कोई जेल से छूटकर आ रहा है, शराबी, आवारा, गँजेड़ी । ड्रग ऐडिक्ट्स कहते हैं ये लोग । ''[29]

मैं इन सब लोगों में प्यार बाँटकर जूठन साफ करती थी, प्लेंटो की और समाज की । ऐसे ही एक ड्रग ऐडिक्ट को वह मदद करने के उद्देश्य से अपने कॉलेज कमरें में ले आती है, उसे खूब भरपेट खाना खिलती है । लेकिन वह वहशी निकलता है । खाने के बाद वह सोने की तैयारी करने लगता है और उससे कहता है - '' फिर लायी किसलिए थी तुम मुझे अपने कमरे में ''[30]

इसके बाद उसके मन में देश लौट आने की तीव्र आकांक्षा जगती है, और वह पिता की इच्छा के विरूद्ध अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर अपने देश लौटती है । शाम के धुंधलके में अपने घर न जाकर एक होटल में रूक जाती है, जहाँ का परिवेश उसके मन में आपात्काल की बहुतसी स्मृतियाँ जगा देता है । वह दुर्बल और लाचार लोगों को सहयोग देने के लिए अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना चाहती है और इसी मानसिकता के कारण अपने पिता को अपना अंतिम पत्र लिखती है ।

इस तरह इस कहानी की नायिका एक पढ़ी-लिखी आधुनिक विचारों की, अपने देश के प्रति प्रेम रखनेवाली लाचार और बेबस लोगों की मदद करनेवाली, बच्चों के प्रति लगाव रखनेवाली, स्वच्छंदी लड़की है ।

निष्कर्ष -

मृदुला गर्ग के नारी पात्रों को देखने के बाद नारी-मन की गहराई का अहसास बड़ी मार्मिकता से हो जाता है । मृदुला जी ने नारी के अंतर्मन और अंतर्जगत् के भाव-विश्व को बड़ी कुशलता से चित्रित किया है । हर कहानी में, हर एक नारी पात्र अपनी अलग विशेषता लिए हुए है । आधुनिक नारी की समस्याओं को तलस्पर्शी दृष्टिकोण, देकर बेबाक ढंग से चित्रित किया है । आधुनिक नारी, जो उच्चशिक्षित है, बुद्धिवादी है, अपने स्वतंत्र अस्तित्व, व्यक्तित्व तथा आत्मविश्वास खोज में रत है । उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा हैं । मृदुला गर्ग ने इन समस्याओं पर अपनी लेखनी बड़ी कुशलता से चलायी है । पाठक आधुनिक नारी के भविष्य तथा समस्याओं के प्रति सचेत होकर सोचने पर मजबूर होता है ।

' ग्लेशियर से ' कहानी-संग्रह की कहानियों में उच्च तथा मध्यवर्गीय नारी पात्रों का चित्रण किया गया है । सभी कहानियों के नारी-पात्र पढ़ी-लिखी नौकरीपेशा नारियाँ है । ' झूलती खुर्सी ' की शेफाली इंडियन एयरलाइन में काम करती है तथा ' ग्लेशियर से ' की श्यामला एक आधुनिक लड़की तथा स्वच्छंद विचारोंवाली शिक्षित लड़की है । ' तुक ' कहानी की मीरा , ' खाली ' कहानी की निर्मला आदि नारी पात्र शिक्षित होने के बाद भी नारी के परंपरागत पत्नी रूप को निभा रहे हैं। ' खरीदार ' की नीना एक सुशिक्षित अविवाहित लड़की है, जो सहायक कमीशनर के पद पर कार्यरत है ।

' शहर के नाम ' कहानी संग्रह की बहुतांश कहानियाँ नारी-प्रधान हैं । इस कहानी संग्रह में लेखिकाने उच्च, मध्य तथा निम्न आदि सभी वर्ग की नारियों को चित्रित किया है । 'तीन किलो की छोरी' कहानी निम्नवर्गीय नारियों की दयनीय स्थिति का चित्रण करती है । शारदाबेन, लल्लीबेन तथा नन्नीबेन के माध्यम से निम्नवर्गीय जातियों की स्त्रियों की समस्याओं को इस कहानी में उजागर किया है तथा 'अनाडी' कहानी की सुवर्णा के माध्यम से अनपढ़ तथा निम्नवर्गीय जातियों की लड़कियों की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है । ' बाहरीजन ' कहानी की नंदिनी तथा सरिता तथा ' अक्स ' कहानी नायिका, ' संगत ' की नायिका आदि नारी पात्रों के माध्यम से आधुनिक मध्यवर्गीय नारी के जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण मृदुला गर्ग ने किया है ।

मृदुला गर्ग के नारी पात्रों को देखने परखने के बाद हम यह कह सकते हैं कि लेखिकाने आधुनिक नारी समस्याओं पर स्वतंत्र दृष्टिकोण से विचार कर उन्हें हमारे सामने प्रस्तुत किया है । आधुनिक नारी के अंतर्जगत की खोज यात्रा आपके सर्जक व्यक्तित्व का एक भाग बन चुका है । नारी मनोविज्ञान की कुशल पारखी मृदुला जी ने पूरी ईमानदारी के साथ अपने नारी-पात्रों के प्रति न्याय किया है ।

संदर्भ सूची

1.	डॉ. गुलाबराय, काव्य के रूप,	पृ. 221
2.	डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, हिंदी कहानी की रचना-प्रक्रिया,	पृ. 181
3.	डॉ. प्रतापनारायण टंडन, हिंदी कहानी कला,	पृ. 330
4.	डॉ. सुमन मेहरोत्रा, हिंदी कहानी में द्वंद्व,	पृ. 16
5.	मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से,	पृ. 12
6.	वही,	पृ. 12
7.	वही,	पृ. 12
8.	मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से,	पृ. 29
9.	वही,	पृ. 57
10.	वही,	पृ. 62
11.	वही,	पृ. 65
12.	वही,	पृ. 83
13.	वही,	पृ. 90
14.	वही,	पृ. 131
15.	वही,	पृ. 138
16.	वही,	पृ. 137
17.	मृदुला गर्ग, शहर के नाम,	पृ. 17
18.	वही,	पृ. 23
19.	वही,	पृ. 33
20.	मृदुला गर्ग, शहर के नाम,	पृ. 41
21.	वही,	पृ. 49
22.	वही,	पृ. 57
23.	डॉ. विजया वारद, साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ	पृ. 60
24.	मृदुला गर्ग, शहर के नाम,	पृ. 62
25.	वही,	पृ. 70
26.	वही,	पृ. 80

27. वही, पृ. 80
28. वही, पृ. 97
29. वही, पृ. 105
30. वही, पृ. 107